युगल वर्ण विलास

स्वस्ति मोद मंजुल करन हरन हजारन हाय।
निज नेहिन आभरन हिय सिय पिय नाम सोहाय॥ १॥
श्रीकर परम पवित्रतर नाम वरन जुग सार।
बंदों विशद विनोद हित सजि सनेह पगि प्यार॥ २॥
नाम उपासक सुहृद शुचि जिनके राग न कोह।
प्रनमों तिनहिं उपाधि बिनु समुझि सोहावन छोह॥ ३॥
रहस अनूपम मधुर वर वरनों नामिन काज।
अपर न दीजे कैसेहूं बिना इष्ट रघुराज॥ ४॥
लाभहुं को इह लाभ है सुख सुषप्रद सतसार।
चारहुँ फल को फल ललित मधुर रकार मकार॥ ५॥
तम नाशन हित मित्र शशि सिरोभाग सत्र मंत्र।
सकृत शरन आवै कोऊ तेहि भव मिटत स्वतंत्र॥ ६॥
अद्भुत इनकी अलष गति विधि हरीश नहिं पाव।
तउ निज मति वैभव सरिस कछु कछु उनहूँ गाव॥ ७॥
चारों नव षट अष्ट दश स्ववश होत तेहि मित्र।
रटे जो नाम सनेह सजि रचना निरखि विचित्र॥ ८॥
नाम सनेही जे रसिक तिन मुख सुनि बर वैन।
वरनों विवि वरनेश गुन करन चारुचित चैन॥ ९॥
जिज्ञासू मन मोद निधि विविध विभव दातार।
नाम उपासक प्रान प्रिय प्रेम परत्व प्रकार॥ १०॥

अतिहिं विलक्षण लक्ष्य रस सरस सुसाधन शीम ।
गोप मरम उज्वल धरम शमन विषम भव भीम ॥ ११ ॥
यहै सकल श्रुति सारतम संत सभा सुख दैन ।
भववारिधि पर पोत जस जोत मनोहर ऐन ॥ १२ ॥
सब हित संजीवन रुचिर रंकन निमित मनीश ।
मन मति गुन गति पार प्रभु वरन निदान गनीश ॥ १३ ॥
नाम मिलन की भूमिका है यह परम अनूप ।
नामाराधन जन निकट प्रीति प्रतीति सुजूप ॥ १४ ॥
पुनि पुनि खोजे सकल दिशि नाम निरत सत स्वच्छ ।
विशद भाग्य बल पाय पद सेवे शतत सुदक्ष ॥ १५ ॥
वसे संग सीखे सुधासिन्धु सनेह सुरीति ।
अर्थ परत्व महत्व रस रूप पुनीत प्रतीत ॥ १६ ॥
भाव चाव अनुभाव विधि रटन उपाधि विहीन ।
श्रीसतगुरु करुनेश पहँ सीखे सकल प्रवीन ॥ १७ ॥
विदा होय वा संग वसि जपे जौक जुत नाम ।
मधुर मधुर मन जीह सह दायक दिल आराम ॥ १८ ॥
मधुप समान गुँजार गुरु वंदनीय धरि ध्यान ।
करो भरो मंगल महा तोष विपुल मन प्रान ॥ १६ ॥
रज सम साधन सकल सुख नाम विहीन विचारु ।
दश षट खर षटका तजे भजे नाम एकतारु ॥ २० ॥
गुह्य किये कल्यान कर होत प्रगट विपरीति ।
ताते वस्तु दुराइये सतत संत शुभ रीति ॥ २१ ॥

अधिकारिन कहँ दीजिये रुचि सुचि मनमधि देखि।
दाह दोष दोऊ दुरे प्रिय प्रीनन अनिमेखि ॥ २२ ॥

चौपाई -

रटन रीति अब बरनि सुनावों।
जेहि सुनि गुनि सुखसिंधु समावों ॥
उर उमंग बल प्रगट बखानों।
प्रभु प्रेरित गति गिरा प्रमानों ॥
नाम रटन चाहे जिमि करै।
संशय रहित मोहनिधि तरै ॥
युक्ति सहित जो सुमिरे कोई।
इत उत महा मोद मन होई ॥
निरूपाधि सुभ सदन सजावै।
और मनुष्य समीप नसावै ॥
साधक एक रहे सोउ बाहिर।
समय बिना कहुँ होय न जाहिर ॥
भोजन लघु कीजे सुचि सोहन।
आलस वपुष तमादि विपोहन ॥
बैठे पद्मासन सुख आसन।
सम शरीर राखे तजि त्रासन ॥
नैन नाशिका अग्र करावै।
आसन ओर न दृष्टि फिरावै ॥

जपे युगल वरनेश सप्रेमा ।
स्वांस जीह संजुत मन नेमा ॥
विपुल प्रकाश प्रतच्छ विलोके ।
जोपै चित थोरे दिन रोके ॥
नाम सुधा घनमांझ सकल सुख ।
सुमिरन विना न शमन होत दुख ॥
दूजो और उपाय सुनीजे ।
बुधि एकाग्र करि सुद्दढ गुनीजे ॥
सिद्ध योग ग्रन्थन मँह गायो ।
मुद्रा सुचि सांभवी सोहायो ॥
है अति गुह्य सकल सिधि कारन ।
भव भयान दुख दारिद वारन ॥
अजिन वसन कुश विमल डसाई ।
बैठे सहजासन मन लाई ॥
पीछे आड़ राखि कुछ प्यारे ।
निरखे अग्रभाग रुचि धारे ॥
सूक्ष्मवस्तु विलोकत रहे ।
निमिष विहाय मौन गति गहे ॥
जपे नाम मुद वलित निरंतर ।
स्वांसोसांस समेत स्वतंतर ॥
शब्द सार मधि श्रवन सुमानस ।
देय लगाय रहित जग लालस ॥

भुज प्रमान दृग सींव सजावै।
निकट दूरि बहकन नहिं पावै॥
आंसू झरन प्रयंत निहारे।
नाम रहित करनी कुल वारे॥
या विधि करत अमल अभ्यासा।
सियपिय रूप परम प्रतिकाशा॥
एक युक्ति पुनि आन बतावों।
जेहि साधत निरभय पद पावों॥
शब्द स्वरूप धवल उर ध्यावे।
अनायास मन मति थिर पावे॥
श्री सतगुरु करुना बल लहिए।
कल्प करोर भूल निज गहिए॥

दोहा

संत सुगुरु अनुकंप विन अगम महा मुद लाह।
युगलानन्यशरन अवस लीजे जुगल पनाह॥ १॥

चौपाई

हृदे नाभि मधि कमल विचारे।
महामनिनमय सजित निहारे॥
वसुदल वा द्वादश दृग देखे।
विशद बुद्धि संजुत सब पेखे॥

परम प्रकाशमान जिय जोहै।
तेहि छवि निकट शूर शशि को है॥
सत चित मोद महा सुखमाकर।
बड़भागी ध्यावै पावै पर॥
सतगुरु नामरूप जपि आदी।
तब सुख सो छावे अनुवादी॥
मान मोह मद मकर हिरावै।
सो सुमनस सज्जन थिर तावै॥
लोक वेद वासना नसावै।
तब अनुराग देश दुति पावै॥
सुनो स्वल्प सुभ ध्यान सोहावन।
गुनत सपदि अंतर अति पावन॥

दोहा

नाम वरन हिय हरन को थापे मध्य सुकंज।
ललित विछाय विछावनो मधुर मोहनो मंज॥ १॥
आस पास आवरन में प्रनव प्रमुख सब मंत्र।
तत्वमसी सोऽहं सकल यह रहस्य शुभ यंत्र॥ २॥
लक्ष्य रहे हरदम हृदे वानी परा उठाय।
स्वांस साथ वर वैखरी रटे सनेह सजाय॥ ३॥
पुरुष प्रकृति महतत्वपर प्रनव ज्ञान सुठि जोग।
मनन नाम मधि सब करै जावत जगत सुभोग॥ ४॥

जिमि करंडमधि गुप्तमनि होत नहीं अनुमान।
तिमि रिधिसिधि पुरुषार्थ सब नाममध्य रित जान॥ ५॥
उद्भवादि जुगभाँति श्रीनाम अंशसे होत।
गुप्त प्रगट समुझे सुजन पावें प्रेम निशोत॥ ६॥
अमित अंड कारन परम रामनाम सुखधाम।
जपिये जीवन जान सम रुचि बढाय वसुजाम॥ ७॥
ज्ञान ध्यान विज्ञान वर भक्ति शक्ति समुदाय।
नाम जपत जागत हृदे दुर्मति दोष नसाय॥ ८॥
श्रुति पुरान सद शास्त्र सब नाम मांझ धिय धारु।
श्रीसीतावर नाम विनु अति असिद्ध निरधारु॥ ६॥
सच्चित आनंदकंद ये भुक्ति मुक्ति दातार।
जपिये याहि सप्रेम ते तूड़ जाय नहिं तार॥ १०॥

चौपाई

ऐसेहिं अगनित भाँति विचारे।
गुन परत्व पुनि पुनि उर धारे॥
स्वांस जीह दोनों मिलि जपिये।
परानंद पगि प्यार सु थपिये॥
दर्द समेत उठावे नामहिं।
तब पावे परतर निज धामहिं॥
दिन दस बीस तीस के पाछे।
रसना मधि मधुपय प्रिय आछे॥

चले सुधा रस मिष्ट मधुरतम।
कछु दिन गए समत भ्रम तम गम॥
कंद आदि रस फीका लागे।
जब मन विवि अच्छर अनुरागे॥
प्यास द्विविध अनयास नसाई।
रैन ऐन सुख सहज समाई॥
इह रस तब पावे भल भाई।
प्रथम स्वाद सब तुच्छ भुलाई॥
अथवा रटतहिं रटत सु नामा।
वर निर्वेद होत अभिरामा॥
षटरस बिरस बूझि अति त्यागे।
सपदि सनेह नाम मधि लागे॥
रसना बीज विशद रस परसे।
फेर कहो किमि जग रस दरसे॥
अति बड़भागी सो जन जानो।
तेहि समान दूजो जनि मानो॥
कर्म ज्ञान वर विरति योग रस।
नाम स्वाद पाये पर नीरस॥
संतत जपो नाम लयलाई।
सब सुख शीम सु नाम सगाई॥

दोहा

या विधि साधन सधत हीं होत नाममय देह।
युगलानन्य सनेह सजि जपो नाम गुन गेह॥ १॥
आगे थोरे दिनन, मधि दीप ज्योति समकाश।
दमक जाति पुनि दामिनी या विधि विविधि विलास॥ २॥
अनल ज्वाल तारेश दिव कारन अतिहिं विचित्र।
नाम कृपा बल वपुष मधि दरसे रूप पवित्र॥ ३॥
रिधि सिधिमधि भूले नहीं रटे निरंतर नाम।
युगलानन्य प्रयास विन मिलिहैं सीताराम॥ ४॥

चौपाई

रसना रटत कछुक दिन बीते।
प्रीति समेत रहित जग रीते॥
कंठ स्थान नाम चलि जावै।
अति अनूप अनुराग सजावै॥
तजि वैषरी मध्यमा वासा।
शब्द सारतम प्रगट प्रकाशा॥
केवल कंठहिं से उच्चारन।
करै प्रेम तहँ अति संचारन॥
खान पान दुख खान न भावै।
नयनन नीर प्रवाह बहावै॥
वानी गदगद बोलि न शके।
जुगल वरन सुमिरन रस छके॥

नस नस निरखि परे बपु सारो।
अस्थि शेष तउ प्रीति संचारो॥
तेज परम अति दुति सुख राशी।
महा मोद रस निज उर भासी॥
पीत होत तन विरह समेता।
मिलन हेतु श्रीकृपा निकेता॥
ललन लोनाई दृग रहे छाई।
कहुँ अटपट बोले गुन गाई॥
नाम प्रभाव होत इमि प्यारे।
कोउ सत लखत चखत रस धारे॥

दोहा

कछुक दिवस तित वास सजि शब्द सर्व श्रुति सार।
आवें पुनि निज हृदय थल तजि के कंठ उदार॥ १॥
धन्य महा गुन खान सो जेहि हिय निवसत नाम।
युगलानन्यशरन तिन्हें बंदत सुरमुनि दाम॥ २॥

चौपाई

पश्यन्ती वानी जेहि नामा।
सकल स्वाद सुख शीम ललामा॥
मन मति सहज होय तित लीना।
नाम सुधानिधि जनु जन मीना॥

उदय अखंड परा रस सोई।
जेहि जोहत पावत मुनि कोई॥
रोम रोम धुनि रा रंकारा।
सुने सुभाविक सरस उदारा॥
वीनादिक अनहद धुनि फीका।
लगे सुने जब निज धुनि नीका॥
कंप स्वेद रोमांच अनुछन।
होय सजे जो श्रमहि विचक्षण॥
सबल अविद्या तम सब नाशे।
निज स्वरूप पररूप प्रकाशे॥
जोग ज्ञान रस रहस अनेका।
जाने विना यतन रति एका॥
सिधि सब खेह समान सु भासे।
मोक्ष महा मुद बिरस निरासे॥

दोहा

चारि पाँच संवत तहाँ रहे जाय रस पूरि।
श्रीगुरु कृपा कटाक्ष से अनुभव जीवन मूरि॥ १॥

चौपाई

बहुरि वहाँ ते सब सुख सागर।
बरनराज परमेश उजागर॥

परा सदन नामी वर वासा।
कियो जाय अभिराम प्रकाशा॥
सहज समाधि उपाधि विहीना।
मन मति वृत्ति तहाँ कुल छीना॥
नख सिष पूरि रहा उह प्यारा।
पुनि नहिं कहन सुनन व्यवहारा॥
रटते रटत भयो यह भाई।
यह सम स्वाद नहीं दरसाई॥
सगुन अगुन की गति झलकाई।
करुनासिंधु नाम प्रभुताई॥
परा अवाच्य स्वाद सब जानो।
कह्यो न जाय ध्याय मन आनो॥
सहस लक्ष दल कमल धाम लौ।
सो पहुंचे अनयास नाम जौ॥
वेद निरंतर नेति वखाने।
सो रस स्वाद नाम ललचाने॥
रिषि मुनि सिद्ध ईश गुन गावें।
जपे नाम सुख सरस समावें॥
कौन अधम जेहि नाम न भावै।
सुधा निदरि विष बरवश खावे॥
चाहे जैसा होय विकारी।
सोउ रटि नाम परम अधिकारी॥

हाय पाय तन मानव नीका।
जपे न नाम सोइ सठ ठीका॥
जाति प्रमुख अभिमान नसाई।
भजो नाम खुद मंगल दाई॥

दोहा

वरन्यो वरन विवेक कल कहर लहर हरनेश।
नामपरत्व प्रकाश कर ग्रंथ सरल सुख देश॥ १॥
श्रुति सतगुरु सत वचन वर निज अनुभव अनुकूल।
विरच्यो विमल विलास श्रीवचन समन प्रतिकूल॥ २॥
पढत सुनत लहिहैं ललित लाह नाम रत लोग।
सियवर पद प्रिय पाइहैं शमन सकल श्रम सोग॥ ३॥
सकल मोद दायक सुभग श्रीसीतावर नाम।
दीजे युगलानन्य को निजमधि नेह ललाम॥ ४॥
छन छन तव सुमिरन करों गुन प्रताप रसरूप।
युगलानन्यशरण अधम तउ सुनाम प्रभु भूप॥ ५॥

इति श्रीयुगलानन्यशरण विरचिता श्रीयुगलवर्ण विलास सम्पूर्णम्।

संकलनकर्ता - विशाल पाण्डेय/सीतारामदास

स्वामीयुगलानन्यशरणजी महाराज द्वारा रचित यह ग्रन्थ सम्वत २०८२
कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को श्रीसद्गुरुदेव प्रस्थानत्रयी राघवकृपाभाष्यकार
रामानन्दीय सार्वभौम जगद्गुरु चित्रकूट तुलसीपीठाधीश्वर महाराज
की कृपा से सीतारामदास द्वारा लिपिबद्ध किया गया।